بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

Office of The sadar Majlis Ansarullah Bharat

دفتر صدر مجلس انصار اللہ بھارت

Ph. +91-01872-220186, Fax, +91-01872-224186, Mob, +91-9815494687, E-Mail: ansarullahbharat@gmail.com

सारांश खुत्बः जुम्अः सैय्यदना ख़लीफ़तुल मसीहिल ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ दिनांक**29.04.2016** बैतुल फ़तूह लंदन।

पहले से बढ़कर इस्लाम की बातें सीखें तथा अपने दोस्तों को बताएँ कि हम तो मुसलमान हैं और इस्लाम की शिक्षानुसार काम करते हैं और आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को ख़ातमुननबिय्यीन मानते हैं।

प्रत्येक अहमदी बच्चे तथा नौजवान का कर्त्तव्य है कि इस्लाम की वास्तविक शिक्षा का पूर्णतः बोध प्राप्त करे, उस शिक्षा का ज्ञान प्राप्त करे जिसको इस ज़माने में खोलकर हमें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने बताया तथा जिस पर अहमदिया जमाअत स्थापित है।

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के पश्चात हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया-

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के दावे तथा जमाअत की स्थापना से लेकर आजतक हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम तथा आपके मानने वालों पर मुसलमानों की ओर से निरन्तर यह आरोप लगाया जाता है कि जैसे हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अपने आपको नबी कह कर अथवा हमने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को नबी मानकर ख़त्म-ए-नबुव्वत का इंकार किया है। जबकि यथार्थ यह है कि यह हम पर पूर्णत्या झूठा आरोप और इलज़ाम है। हमने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की शिक्षानुसार ही आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़ात्मिय्यत-ए-नबुव्वत (नबुव्वत के स्तर की चरम सीमा) के इससे अधिक क़ायल तथा इसको प्रकट करने वाले हैं जितने दूसरे मुसलमान इसको प्रकट करते हैं। बल्कि दूसरे मुसलमानों ने आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के स्तर का लाखवाँ भाग भी नहीं समझा जितना अल्लाह तआला की कृपा से हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की शिक्षा के कारण अहमदियों ने समझा है। तो इस प्रकार ख़त्म-ए-नबुव्वत को आधार बनाकर दूसरे मुसलमान पहले से ही अहमदियों का विरोध करते आए हैं। मस्जिदों में इसका अत्यधिक प्रचार किया जाता है यहाँ तक कि बच्चे भी जिनको सम्भवतः कलिमा भी अच्छी प्रकार याद न हो, अहमदी बच्चों को स्कूलों में यह कहते हैं कि तुम मुसलमान नहीं हो। कुछ बच्चे बच्चियों ने पिछले दिनों मुझे लिक्खा कि हमारे साथ इस प्रकार का व्यवहार होता है। तो मैं उनको यही कहता हूँ कि पहले से बढ़कर इस्लाम की बातें सीखें तथा अपने दोस्तों को बताएँ कि हम तो मुसलमान हैं और इस्लाम की शिक्षानुसार काम करते हैं और आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को ख़ातमुननबिय्यीन मानते हैं। प्रत्येक अहमदी बच्चे तथा नौजवान का कर्त्तव्य है कि इस्लाम की वास्तविक शिक्षा का पूर्णतः बोध प्राप्त करे, उस शिक्षा का ज्ञान प्राप्त करे जिसको इस ज़माने में खोलकर हमें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने बताया तथा जिस पर अहमदिया जमाअत स्थापित है। कि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम, अल्लाह तआला की ओर से शरीअत लाने वाले अन्तिम नबी हैं तथा शरीअत के पूरा होने की दृष्टि से आप पर नबुव्वत पूरी हो गई अर्थात अब कोई नई शरीअत नहीं आ सकती। इसी प्रकार क़ुरआन शरीफ़ अन्तिम शरीअत की किताब है और इसी प्रकार हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम, आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ग़ुलामी में आने वाले आपके ग़ुलाम नबी हैं। आपकी शरीअत को जारी करने वाले नबी हैं जिन्होंने आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शरीअत को ही दुनया में फैलाना है। तो इस प्रकार हमने यही व्यवहार अल्लाह तआला का देखा है, जब भी विरोध बढ़ा, इस विरोध ने जमाअत के लिए खाद का काम किया। इससे हमें तो कोई न चिंता कभी थी और न है और न होनी चाहिए। इस वर्तमान विरोध से भी मीडिया के द्वारा जमाअत का बड़ा प्रचार हुआ है जो कि सम्भवतः इससे पहले हम इतने कम समय में न कर सकते थे और फिर यह भी कि कुछ अहमदी नौजवान जो धर्म में इतनी रूचि नहीं रखते थे, उन्हें भी जमाअत के साथ तो इतना, उनका कुछ युवाओं का उठना बैठना नहीं था अथवा आना नहीं था या कभी ईद पर आ गए अथवा दूरी से सम्पर्क बनाकर रक्खा। परन्तु इस मीडिया के द्वारा उन्हें पता चल गया कि हम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को नबी मानते हैं लेकिन आँहज़रत

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ग़ुलामी में। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ग़ुलामी का किस प्रकार हक़ अदा किया और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ख़ातमुन नबिय्यीन होने के स्तर को किस प्रकार स्थापित करके दिखाया और हमारा किस प्रकार मार्ग दर्शन किया, इस विषय में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ही कुछ कथन पेश करता हूँ। आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि निःसन्देह याद रक्खो कि कोई व्यक्ति मुसलमान नहीं हो सकता तथा आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का आज्ञापालक नहीं बन सकता जब तक आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को ख़ातमुन नबिय्यीन स्वीकार न करे।

आप फ़रमाते हैं कि हमारा ध्यय जिसके लिए ख़ुदा तआला ने हमारे दिल में जोश डाला है, यही कि केवल रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नबुव्वत क़ायम की जाए जो सदैव के लिए ख़ुदा तआला ने स्थापित की है तथा सारी झूठी नबुव्वतों को टुकड़े टुकड़े कर दिया जाए जो इन लोगों ने अपनी नई नई बातों के द्वारा क़ायम की हैं। नई नई बातें पैदा करके ये आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शिक्षा से दूर हटे हुए हैं। वास्तव में तो ये नबुव्वत की मुहर को तोड़ने वाले हैं। फ़रमाया- इन सारी गद्दियों को देख लो तथा क्रियात्मक रूप से अवलोकन करो कि क्या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़त्म-ए-नबुव्वत पर हम ईमान लाए हैं अथवा वे? फ़रमाया कि यह ज़ुल्म और शरारत की बात है कि ख़त्म-ए-नबुव्वत से ख़ुदा तआला का केवल यह अभिप्रायः बताया जावे कि मुंह से ही ख़ातमुन नबियूयीन मानो और करतूतें वही करो जो तुम स्वयं पसन्द करते हो तथा अपनी एक अलग शरीअत बना लो। बग़दादी नमाज़, मअकूस नमाज़ इत्यादि नई घड़ी हुई हैं। फ़रमाया- क्या क़ुरआन शरीफ़ अथवा नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आचरण में भी इसका कहीं पता लगता है? और ऐसा ही या शेख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी शईअन लिल्लाह कहना, इसका प्रमाण भी कहीं क़ुरआन शरीफ़ से मिलता है? आँहज़रत के समय में तो शेख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी रज़ीअल्लाहु अन्हु का अस्तित्व भी न था, फिर किस ने बताया था, शर्म करो। क्या शरीअत की पाबन्दी और व्यवस्था इसी का नाम है? अब स्वयं ही फ़ैसला करो कि क्या इन बातों को मानकर, ऐसे कर्म करके तुम इस योग्य हो कि मुझ पर आपत्ति करो कि मैंने ख़ातमुन नबिय्यीन की मुहर को तोड़ा है। वास्तविकत और सच्ची बात यही है कि यदि तुम अपनी मस्जिदों में नई नई बातों को प्रवेश न देते और ख़ातमुन नबिय्यीन सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सच्ची नबुव्वत पर ईमान लाकर आप सल्लाहु अलैहि वसल्लम के मार्ग दर्शन और पद्-चिन्हों को अपना इमाम बनाकर चलते तो फिर मेरे आने की क्या आवश्यकता होती? तुम्हारी इन नई नई बातों और नई नबुव्वतों ने ही अल्लाह तआला के स्वाभिमान को हरकत दी कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की चादर में एक व्यक्ति को अवतरित करे जो इन झूठी नबुव्वतों के बुत को तोड़ कर नष्ट कर दे। अतः इसी कार्य के लिए ख़ुदा ने मुझे नियुक्त करके भेजा है।

आप फ़रमाते हैं कि गद्दी धारियों को सजदा करना अथवा उनके घरों की परिक्रमा करना, ये तो बिल्कुल छोटी और सामान्य बातें हैं। इस प्रकार अल्लाह तआला ने इस जमाअत को इस लिए स्थापित किया है कि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नबुव्वत और सम्मान को पुनः स्थापित करें। एक व्यक्ति जो किसी का प्रेमी कहलाता है यदि उसके जैसे हज़ारों और भी हों तो उसके इश्क़ और मुहब्बत की क्या विशेषता रही? यदि ये रसूलुल्लाह सल्लाहु अलैहि वसल्लम की मुहब्बत और इश्क़ में लीन हैं, जैसा कि ये दावा करते हैं, तो क्या बात है कि हज़ारों ख़ानक़ाहों तथा मज़ारों की पूजा करते हैं। मदीना तय्यबा तो जाते हैं परन्तु अजमेर तथा दूसरी ख़ानक़ाहों पर नंगे सिर और नंगे पाँव जाते हैं। पाक पट्टन की खिड़की में से गुज़र जाना ही मुक्ति के लिए पर्याप्त समझते हैं। किसी ने कोई झंडा खड़ा कर रक्खा है किसी ने कोई ने कोई अन्य सूरत धारण कर रक्खी है। इन लोगों के उर्सों और मेलों को देखकर एक सच्चे मुसलमान का दिल काँप जाता है कि यह इन्होंने क्या बना रक्खा है। यदि ख़ुदा तआला को इस्लाम का स्वाभिमान न होता और إِنَّ الدِّيۡنَ عِنۡدَ اللّٰهِ الۡاِسۡلَامُ ख़ुदा का कलाम न होता और उसने न फ़रमाया होता कि وَاِنَّا نَحۡنُ نَزَّلۡنَا الذِّكۡرَ وَاِنَّا لَهٗ لَحٰفِظُوۡنَ तो निःसन्देह आज वह दशा इस्लाम की हो गई होती कि उसके मिटने में कोई भी सन्देह न हो सकता था। परन्तु अल्लाह तआला के स्वाभिमान ने जोश मारा तथा उसकी रहमत और इस्लाम की सुरक्षा के वादे ने ज़ोर किया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की छवि को फिर नाज़िल करे और इस ज़माने में आपकी नबुव्वत को नए सिरे से जीवित करके दिखा दे। अतः उसने इस सिलसिले को स्थापित किया तथा मुझे दूत और मेहदी बनाकर भेजा।

हुज़ूर पुर नूर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया- मसीह मौऊद की नियुक्ति का वास्तविक उद्देश्य तथा लक्ष्य बयान फ़रमाते हुए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं- हमारा वास्तविक उद्देश्य और इच्छा आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का प्रताप प्रकट करना है तथा आपकी महानता को स्थापित करना है। हमारा वर्णन तो निम्न चीज़ है इस लिए कि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम में जज़्ब और अफ़ाज़े की शक्ति है और इसी अफ़ाज़े में हमारा वर्णन है अर्थात आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम में यह शक्ति है कि आप फ़ैज़ पहुंचाने वाले तथा लाभान्वित करने वाले हैं तथा

इसी फ़ैज़ और लाभ में, आपने फ़रमाया कि मेरा भी वर्णन आ गया। यह आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का फ़ैज़ ही है जिसने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को यह स्तर प्रदान किया। अतः आँहज़रत सल्लसल्लाहु अलैहि वसल्लम के फ़ैज़ की परिधि ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को अपने भीतर समेट लिया और अब आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के वर्णन के साथ आपके सच्चे आशिक़ की चर्चा भी शामिल हो गई।

फिर इस बात को बयान करते हुए कि आपकी नियुक्ति का उद्देश्य यह है कि मुसलमानों में एक हज़ार साल के अन्धेरे ज़माने के कारण जो नई नई बातें तथा बिदअतें पैदा हो गईं थीं, उनका सुधार हो, आप फ़रमाते हैं- फिर मैं यह कहता हूँ कि ख़ुदा की ओर से जो आते हैं वे कोई बुरी बात तो नहीं कहते, वे यही तो कहते हैं कि ख़ुदा की ही इबादत करो और मख़लूक़ से नेकी करो। नमाज़ें पढ़ो और जो ग़लतियाँ दीन में पड़ गई हुई हैं उन्हें निकाल दो। अतः इस समय जो मैं आया हूँ तो मैं इन ग़लतियों के सुधार हेतु भेजा गया हूँ, जो फ़ैज आवज के ज़माने पैदा हो गईं थीं। सबसे बड़ी ग़लती यह है कि ख़ुदा तआला की श्रेष्टता एंव प्रताप को ख़ाक में मिला दिया गया है। एक ओर तो ईसाई कहते हैं कि युसूअ जीवित है और तुम्हारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जीवित नहीं और वे इसी से हज़रत ईसा को ख़ुदा का बेटा घोषित करते हैं क्यूँकि वे दो हज़ार वर्ष से जीवित चले आते हैं, न ज़माने का कोई प्रभाव उन पर हुआ। दूसरी ओर मुसलमानों ने यह स्वीकार कर लिया कि
निःसन्देह मसीह आसमान पर चला गया और दो हज़ार वर्ष से इसी प्रकार मौजूद है। कोई अन्तर एंव बदलाव उसकी स्थिति और अवस्था में नहीं हुआ और रसूलुल्लाह सल्लाहु अलैहि वसल्लम मर गए। मैं सच कहता हूँ कि मेरा दिल काँप जाता है जब मैं एक मुसलमान मौलवी के मुंह से ये शब्द सुनता हूँ कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मर गए। ज़िन्दा नबी को मुर्दा रसूल घोषित किया गया। इससे बढ़ कर अनादर और अपमान इस्लाम की और क्या होगी। परन्तु यह भूल स्वयं मुसलमानों की है जिन्होंने क़ुरआन शरीफ़ के बिल्कुल विरुद्ध एक नई बात पैदा कर ली। क़ुरआन शरीफ़ में मसीह की मौत का बड़ा स्पष्ट वर्णन किया गया है। परन्तु वास्तव में इस त्रूटि का निवारण मेरे लिए ही रक्खा था क्यूँकि मेरा नाम ख़ुदा तआला ने हकम (अन्तिम निर्णायक) रक्खा है। ख़ुदा तआला ने जिसको हकम करके भेजा है उससे ये बातें छिपी हुई नहीं रह सकतीं। भला दाई से पेट छिप सकता है। क़ुरआन से स्पष्ट रूप से निर्णय कर दिया है कि अन्तिम ख़लीफ़ः मसीह मौऊद होगा, और वह आ गया है। अब भी यदि कोई इस पर लकीर का फ़क़ीर रहेगा जो फ़ैज आवज (बिगाड़ की चरम सीमा) के ज़माने की है तो वह न केवल स्वयं हानि उठाएगा अपितु इस्लाम को हानि पहुंचाने वाला कहा जाएगा और वास्तव में इस अनुचित और अपवित्र आस्था ने लाखों आदमियों को नास्तिक कर दिया है। इस सिद्धांत ने इस्लाम का घोर अपमान किया और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का अनादर। जब यह मान लिया कि मृतकों को जीवित करने वाला, आसमान पर जाने वाला, अन्तिम निर्णायक, युसूअ मसीह ही है तो फिर हमारे नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तो, मआज़ अल्लाह कुछ भी न हुए। जबकि उनको रहमतुल लिल आलमीन कहा गया है और वे काफ़्फ़तिन्नास के लिए रसूल होकर आए, ख़ातमुन नबिय्यीन वही हुए। उन लोगों का, जो मुसलमान कहलाकर ऐसी अनुपयुक्त आस्था रखते हैं यह भी विचार है कि इस समय जो पक्षी उपस्थित हैं, उनमें कुछ मसीह के हैं और कुछ ख़ुदा तआला के। नऊजु बिल्लाहि मिन ज़ालिक। मैंने एक बार एक मुसलमान से प्रश्न किया कि यदि इस समय दो पक्षी पेश किए जावें और पूछा जावे कि ख़ुदा का कौनसा है और मसीह का कौनसा, तो उसने उत्तर दिया कि मिल जुल गए हैं।

हुज़ूर पुर नूर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया- अब मैं हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के कुछ कथन तथा घटनाएँ पेश करता हूँ जिनके द्वारा आपके पवित्र जीवन की कुछ बातें प्रदर्शित होती हैं और पता चलता है कि आप अपने आक़ा व मुताअ हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के स्तर एंव श्रेष्टता को केवल ज्ञान शीलता एंव तर्क पूर्ण रंग में प्रमाणित करने वाले नहीं थे बल्कि इस्लाम की शिक्षा के क्रियात्मक रूप का प्रदर्शन भी आपकी शिक्षा एंव कर्म के द्वारा होता है।

एक बार एक व्यक्ति अब्दुल हक़ नामक नौजवान जो ईसाई हो गया था, सत्य की खोज में क़ादियान आया और हज़रत अक़दस मसीह मौऊद के पास कुछ देर ठहरा। विभिन्न मुलाक़ातों में आप अलैहिस्सलाम उनको उपदेश फ़रमाते थे। एक दिन उन्होंने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से कहा कि एक ईसाई के सामने जब आप अलैहिस्सलाम का नाम लिया तो उसने आपको गाली दी, मुझे यह बहुत बुरा लगा। आपने फ़रमाया कि गालियाँ देते हैं इसकी तो मुझे कोई चिंता नहीं, अनेक पत्र गालियों के आते हैं जिनका मुझे हर्जाना भी देना पड़ता है और खोलता हूँ तो गालियाँ होती हैं, विज्ञापनों में गालियाँ दी जाती हैं। हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- आजकल भी यही स्थिति है पाकिस्तान में बड़े बड़े पोस्टर लगते हैं तथा अब तो खुले लिफ़ाफ़ों पर गालियाँ लिख कर भेजते हैं। परन्तु इन बातों से क्या होता है, ख़ुदा का नूर कहीं बुझ सकता है? सदैव नबियों और सत्य मार्ग वालों के साथ ना-शुक्रों (अकृत्ज्ञों) ने यही व्यवहार किया है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं- हम जिसके पद् चिन्हों पर

आए हैं, अर्थात मसीह-ए-नासरी, उसके साथ क्या हुआ? क्यूँकि ये ईसाई हो गए थे इस लिए मसीह का उदाहरण पेश किया कि उनके साथ भी तो यही हुआ था, गालियाँ दी जाती थीं, अत्याचार हुआ, सलीब पर भी चढ़ गया। फिर फ़रमाया- और हमारे नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ क्या हुआ? अब तक धूर्त प्रकृति के लोग गालियाँ देते हैं। मैं तो मानव जाति का वास्तविक शुभ चिंतक हूँ जो मुझे दुश्मन समझता है वह स्वयं अपनी जान का दुश्मन है।

जैसा कि मैंने कहा यह अब्दुल हक़ नामक व्यक्ति कई दिन वहाँ रहा तथा आपके साथ वार्ता चलती रही और आप उनके विभिन्न प्रश्नों के उत्तर भी देते रहे। एक दिन हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने उन्हें फ़रमाया कि मैं आपको बार बार यही कहता हूँ कि जब तक आपकी समझ में कोई बात न आवे, उसे आप बार बार पूछें अन्यथा यह उचित बात नहीं है कि एक बात को आप समझे नहीं और कह दें कि हाँ समझ लिया। इसका परिणाम बुरा होता है, तो यह आपका साहस था, बार बार आप कहते थे कि पूछो। आप अलैहिस्सलाम की एक तड़प थी कि लोगों पर सत्य खुले और वे उसे स्वीकार करें।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- एक घटना एक रोगी को पूछने की बयान करता हूँ परन्तु इसमें हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने दुआ के संदर्भ में आजकल के पीरों फ़क़ीरों की भांति अपनी बड़ाई बयान नहीं फ़रमाई कि मैं दुआ करुंगा और मेरी दुआएँ क़बूल होती हैं अपितु ख़ुदा तआला के एकेश्वरवाद तथा दुआ की क़बूलियत के दर्शन शास्त्र तथा अपनी अवस्था को ख़ुदा तआला की इच्छा के अनुसार ढालने के लिए ही बयान फ़रमाया। घटना इस प्रकार है कि क़ुरैशी साहब कई दिनों से बीमार होकर दारुल अमान में हज़रत हकीमुल उम्मत से इलाज के लिए आए हुए थे। उन्होंने कई बार हज़रत हुज्जतुल्लाह (हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम) की सेवा में दुआ के लिए निवेदन किया। आपने फ़रमाया कि हम दुआ करेंगे। एक दिन आप उनके मकान पर तशरीफ़ ले गए। फ़रमाया कि मैंने दुआ की है। परन्तु वास्तविकता यह है कि केवल दुआएँ कुछ नहीं कर सकतीं जब तक अल्लाह तआला की इच्छा और आदेश न हो। ख़ुदा तआला जब अपनी कृपा करता है तो कोई कठिनाई शेष नहीं रहती परन्तु इसके लिए आवश्यक है कि इंसान अपने अन्दर बदलाव पैदा करे। फिर जिसको वह देखता है कि यह लाभप्रद अस्तित्व है तो उसके जीवन में उन्नति दे देता है अर्थात उसकी आयु को बढ़ा देता है।

सच यही है कि ख़ुदा तआला के आदेश के बिना प्रत्येक कण जो मनुष्य के भीतर जाता है, कभी लाभप्रद नहीं हो सकता। तौबा एंव इस्तिग़फ़ार बहुत करना चाहिए ताकि ख़ुदा तआला अपना फ़ज़्ल करे। जब ख़ुदा तआला का फ़ज़्ल आता है तो दुआ भी क़बूल होती है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं- मेरा मार्ग यही है कि जब तक दुश्मन के लिए दुआ न की जावे, पूर्ण रूप से मन शुद्ध नहीं होता। **उदऊनी अस्तजिब लकुम** में अल्लाह तआला ने सीमा नहीं बांधी है कि दुश्मन के लिए दुआ करो तो क़बूल नहीं करूंगा अपितु मेरा तो यह धर्म है कि दुश्मन के लिए दुआ करना यह भी नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सुन्नत है। हज़रत उमर रज़ीअल्लाहु अन्हु इसी के द्वारा मुसलमान हुए थे। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आपके लिए प्रायः दुआ किया करते थे। इस लिए कंजूसी के साथ व्यक्तिगत दुश्मनी नहीं करनी चाहिए तथा वास्तव में हानि कारक नहीं होना चाहिए। शुक्र की बात है कि हमने अपना कोई दुश्मन नहीं छोड़ा जिसके लिए दो तीन बार दुआ न की हो, एक भी ऐसा नहीं और यही मैं तुम्हें कहता हूँ।

अन्त में हुज़ूर पुर नूर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया- इस प्रकार ये कुछ बातें हैं जो मैंने बयान की हैं उस बहुत बड़े विशाल भंडार में से जो आपने हमारे सामने सच्चे इस्लाम की शिक्षा और आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आचरण के अनुसार रक्खा है जिसके द्वारा ज्ञात होता है कि आप अलैहिस्सलाम ने ही आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और क़ुरआन की शिक्षा को अपनाने और अपने ऊपर लागू करने का हक़ अदा किया है। ख़त्म-ए-नबुव्वत का केवल नारा नहीं लगाया अपितु आपका प्रत्येक कथन एंव कर्म अपने आक़ा व मुताअ के आज्ञा पालन में था तथा उसी शिक्षा और उसी शरीअत को ही क़ायम करने की आपको तड़प थी ताकि दुनया को पता चले कि यह सुन्दर शिक्षा जो आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर उतरी है, यही वास्तविक मुक्ति है तथा अपने मानने वालों को भी आपने इसके अनुसार कर्म करने का उपदेश एंव निर्देश फ़रमाया।

अल्लाह तआला हमें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की जमाअत में शामिल होने का हक़ अदा करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। जहाँ क्रियात्मक उदाहरण क़ुरआन व सुन्नत क़ायम करने का सामर्थ्य प्रदान करे वहीं आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के स्तर एंव श्रेष्टता का सम्पूर्ण बोध हमें प्रदान करे तथा इस्लाम की वास्तविक रूप रेखा, हम दुनया को दिखलाने वाले हों।